P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VIII April-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

समानान्तर कथा साहित्य–एक दृष्टि

पुष्पा यादव
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
एम0बी0एम0 गर्ल्स डिग्री कालेज,
कानपुर

सारांश

समानान्तर कथा साहित्य में कहानीकारों ने आदर्शवाद के बजाय यथार्थ को कहानी धरातल पर उतारा और कहानी में उन्हीं घटनाओं का यथातथ्य वर्णन पात्र की भाषा और शैली के आधार पर कथा साहित्य में वर्णित कर दिया। समाज क बदलते स्वरूप का वर्णन, तेजी से बदलती युवा पीढ़ी की सोच, अपने हक के लिए आम आदमी की लड़ाई, राजनीति का विकृत स्वरूप, अर्थ को पाने के लिए सब कुछ करने को तैयार आम आदमी के वास्तविक स्वरूप को अपनी कहानी में स्थान दिया है। इस प्रकार समानान्तर कहानी एक यथार्थवादो सोंच के रूप में उभरकर अपने कथा आन्दोलन में दृष्टिगत होती है।

मुख्य शब्द : अस्मिता, कुठाराघात, यथार्थ, अन्तर्मन, प्रचण्ड स्वार्थ, विशिष्ट, विसंगतिया, प्रतिष्ठा, सार्थकता

पस्तावना

आठवें दशक के प्रथम चरण में समानान्तर कथा साहित्य का सूत्रपात हुआ और इसके ध्वजवाहक अगुवा के रूप में कमलेश्वर ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कहानीकारों का एक बहुत बड़ा संगठन लेकर एक बहुत बड़े और ऊँचे मंच से इसके नायक ने कई जारेदार घोषणाएँ की। दस बारह अंकों में समानान्तर कहानी विशेषांकों का उद्घोष हुआ और कई वार्षिक जलसे भी हुए। सन् 70–72 के आसपास कहानी का बदला हुआ रूप पाठकों के सामने स्पष्ट तौर पर दिखाई देने लगा। इस कथा आन्दोलन में आम आदमी की संघर्षशील चेतना को सामने लाने की चेष्टा की गई।

मूल उद्देश्य

उत्तरोत्तर विकास के दौर में फलती–फूलती उपभोक्तावादी संस्कृति से होते सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरूप मानव मूल्यों की रक्षा करती हमारी भारतीय संस्कृति के विकृत होते स्वरूप से सामाजिक नियमों के विरासत पर कुठाराघात होते देख आंठवें दशक के समानान्तर कथा साहित्य के कहानीकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से पाठक के अन्तर्मन में व्याप्त नकारात्मक सोच, दूषित मानसिकता, प्रचण्डस्वार्थ, वैचारिक एवं आर्थिक भ्रष्टाचार, मानव मूल्यों का ह्रास आदि का विश्लेषण कर उसम सकारात्मक सोच के बीज का अंकुरण करने का प्रयास किया है। जिससे खास कर समाज की युवा पीढ़ी को एक नई एवं सही दिशा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके। आठवें दशक के मुख्य कथाकार कमलेश्वर ऊषा प्रियम्बदा, मृणाल पाण्डेय, निर्मल वर्मा, उदयभानु, दूधनाथ सिंह आदि हैं।

अध्ययन

यहाँ कहानीकार का काम यह नहीं रहा कि वह आम आदमी को पहचाने और चित्रित करे बल्कि उसके लिए जरूरी हो गया कि वह चेतनशीलता को एक मूल्यांकन परक भाषा में रूपायित करें, तथा बदली हुई परिस्थितियों के बदलाव का रेखांकन भी अपनी कहानियों में करें। समानान्तर कथा साहित्य में प्रेरक तत्व के रूप में उभरकर विभिन्न सामाजिक समस्यायें कहानीकार के सामने उपस्थित हो गयी, जैसे तेजी से फलती–फूलती उपभोक्तावादी संस्कृति का प्रभाव, आर्थिक असहायता के बीच आम आदमी का समझौता पूर्ण रूख, नारी की बदलती स्थिति, मध्यमवर्गीय लोगो का संघर्षरत जीवन, जातिवाद, वर्ग संघर्ष, राजनीति का विकृत स्वरूप, इन सारी बातों ने कहानीकार को यथार्थ के धरातल पर उतरने के लिए मजबूर कर दिया। अपने लेखन साहित्य के माध्यम से समाज में व्याप्त बदलाव का चित्रण किया तथा बदलते समाज से होने वाले परिणामों की ओर भी इशारा किया। जैसे ऊषा प्रियम्बदा की 'वापसी' कहानी में ''गजाधर बाबू घर में तब तक सबके लिए प्यारे थे जब तक वह प्रतिमाह भरपूर वेतन लाते थे लेकिन आज रिटायर होने के बाद वह परिवार के लिए बोझ बन गये है।[1]

पारिवारिक मूल्यों का विघटन, बढ़ती मंहगाई आर भौतिकतावादी मूल्य प्रतिष्ठित होने के कारण पूरी अर्थव्यवस्था ही चरमरा गई है समाज का सबसे ऊँचा तबका उच्चमध्यम वर्ग विदेशी संस्कृति का अन्धानुकरण करता जा रहा है।

बुद्धिवाद और व्यक्तिवाद के नाम पर यह वर्ग अपने ही भीतर जीने लगा है। 'मृणाल पाण्डेय' की 'कगार' कहानी में ''एक ऐसे संवेदनशील भारतीय युवक जो विदेशी महिला से विवाह कर लेता है। इस विदेशी पत्नी के व्यक्तिवादी आचरण स्वतंत्रता के नाम पर उच्छखंलता का व्यवहार संतति के प्रति पत्नी की गैर जिम्मेदारी आदि के कारण वह आत्म हत्या कर लेता है।[2]

इस प्रकार समानान्तर कहानीकारों ने समसामयिक समस्याओं को उजागर करने की कोशिश की है। क्योंकि आज की जिन्दगी और कहानी की स्थितियों में अन्तर नाम की कोई चीज नहीं रह गयी है। दरअसल जीवन और कहानी में निरूपित समस्यायें और संघर्ष अलग–अलग न होकर सीधे एक रूप हो गये है। डा0 धनंजय के शब्दों मे, आज की कहानी की यह विशेषता है कि कथा–स्थिति का यथार्थ उसी से उद्‌भूत नहीं है। जैसा कि अक्सर होता रहा है। यथार्थ अब वह नहीं है जो कहानी में बनता है बल्कि यथार्थ से ही कहानी बनती है। ''इसमें पारिवारिक विघटन या समस्याओं से सम्बन्धित कहानियां श्रीकान्त वर्मा की 'झाड़ी', महेन्द्र भल्ला की एक पति के नोट्स दूघनाथ सिंह की 'रक्तपात' निरूपमा सेवती की टच्चा आदि। राजनीतिक चेतना से सम्बन्धित कहानियाँ गोविन्द मिश्र की कहानी 'जनतन्त्र' सुरेश सिन्हा की 'हालात' गिरिराज की 'पेपर वेट' और रमेश उपाध्याय की 'जुलूस' आदि।

इसी प्रकार वर्तमान युग में आर्थिक विषमता के बीच पिसता आम आदमी का यथार्थ चित्रण हमारे समानान्तर कहानीकारों ने अपनी कहानियों में किया। जिसमें युवा पीढ़ी अपनी परिवर्तित परिस्थितियों में नये जीवन मूल्यों को स्वीकारती है वह नैतिक बोध से दूर सिर्फ अथ की दुनियाँ में जीना चाहती है। उदयभानु पाण्डेय की कहानी 'प्रलाप एक हत्यारे' पृथ्वीराज मोंगा की कहानी 'कॉच घर' माधुरी की कहानी 'कुप्पी' रामशीश की कहानी 'घर' आदि का वर्णन पाठक को अन्दर तक झकझोर देता है।

समानान्तर कथाकार ने समाज में व्याप्त हर प्रकार की स्थितियों का यथार्थ चित्रण अपने वर्तमान साहित्य में किया है इसी कारण वर्तमान साहित्य की सार्थकता सिद्ध हो रही है साहित्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से समाज और जीवन के हर पहलू का यथार्थ आम आदमी तक पहुचाने का कार्य किया है।

समानान्तर कहानी अपने विशिष्ट चरित्र के कारण अपनी अलग अस्मिता बनाने में सक्षम हुई है। इसने समय के साथ परिवर्तन गामी स्वभाव को भी प्रमाणित कर दिया है यही कारण है कि यह अपनी पूर्ववर्ती कहानियों से कई मामलों में भिन्न है। समकालीन कहानी शिल्प, भाषा, सवेदना और दृष्टि सभी तत्वों में पर्याप्त परिवतन कर चुकी है।

मधुरेश के शब्दों में, ''समकालीन कहानी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि ''उसने वर्जित क्षेत्रों में प्रवेश किया है और किसी भी बात का समर्थन महज इसलिए नहीं किया कि वह अब तक मान्य रही है बल्कि परम्परागत नैतिक मान्यताओं को अपने विवेक से तौलन के आग्रह की जो परम्परा यशपाल की कहानियों से शुरू हुई इसने इस परम्परा का निश्चित विकास किया है।''

उपसंहार

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आंठवें दशक के समानान्तर कथा साहित्य में कहानीकार ने समाज में व्याप्त मानवीय विसंगतियों को अपने लेखन साहित्य के माध्यम से उभारने और उसका उचित समाधान पाने का प्रयास करता हुआ दृष्टिगत होता है। इन कहानियों में शोषण के विरूद्ध खोखली सामाजिक व्यवस्था दम घुटती हुई नजर आती है। निरन्तर अमानवीय, क्रूर, और ऊपरी तौर पर विद्रोह करने की भावना व्यक्ति को थोड़ी देर के लिए उत्साहित और आक्रोशित करती है जहां वह क्षणभर के लिए उत्तेजित होकर संघर्ष करने को तैयार भी हो जाता है लेकिन वह बौद्धिक स्तर पर एक जुट नहीं हो पाता, तब वह अकेली आवाज समूह की आवाज बनने से पहले ही शान्त करा दी जाती है और व्यक्ति इन सबको अपना भाग्य समझकर सन्तोष कर लेता है या खुदकुशी कर लेता है ऐसे में प्रबल आवश्यकता है। इन कहानियों के माध्यम से पाठक के दिलो दिमाग में इस व्यवस्था के खिलाफ आवाज उठाने के लिए उद्धेलित करना, जब यह आवाज हर एक हृदय को उद्धेलित करेगी तो समाज में एक ऐसी परिवर्तन की लहर दौड़गी जिससे प्रत्येक व्यक्ति सुख और शान्तिपूर्ण जीवन जीने का हकदार बन जायेगा।

सुझाव

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि आंठवे दशक का समानान्तर कथा साहित्य मात्र एक आन्दोलन बनकर रह गया और एक आन्दोलन पूरे समाज की सोच और परम्परा को बदलने में सक्षम नहीं हो सकता, यह सही है कि उस दशक में समाज का युवा वर्ग समाज की परम्पराओं को बदलने के लिए क्रान्ति की ज्वाला अपने हृदय में दबाये आक्रोशित जीवन व्यतीत कर रहा था लेकिन बौद्धिक रूप से उस वर्तमान परिस्थिति का सामना करने और अपनी क्रान्तिकारी सोच की गागर को उड़ेलने में वह समर्थ नही था क्योंकि पूरा समाज टुकड़ों–टुकड़ों में बंटा था एक सूत्रता का पूरा अभाव था। अतः अकेली आवाज पूरे समाज के परिवेश को बदलने में असमर्थ सिद्ध होती है आवश्यकता आज जातिवाद, क्षेत्रवाद, वर्गवाद से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने, आम आदमी का वैचारिक दृष्टिकोण बदलने तथा जीवन मूल्यों में नया चिन्तन लाने की है। जिससे युवा वर्ग में सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा है तथा जीवन नवीन उत्साह से भर उठे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मेरा पन्ना–खण्ड–दो–एक, कमलेश्वर शब्दकार 2203 गली डकौतान तुर्कमान गेट दिल्ली– 110080
2. कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, देसाई मंजुला क्वालिटी बुक पब्लिकेशन्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, कानपुर।
3. नई कहानी की भूमिका, कमलेश्वर शब्दकार 2203 गली डकौतान तुर्कमान गेट दिल्ली–110080
4. समकालीन हिन्दी कहानी, हरिहर प्रसाद विद्या साहित्य संस्थान इलाहाबाद।
5. स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी कोशकथायन, शुक्ल राजेन्द्र शब्द श्री प्रतिष्ठान कानपुर।
6. नई कहानी प्रतिनिधि हस्ताक्षर, वेद प्रकाश जवाहर पुस्तकालय सदर बाजार मथुरा।
7. कमलेश्वर, सिंह मधुकर शब्दकार प्रतिष्ठान दिल्ली।